National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 01-04-2020; Accepted: 15-04-2020; Published: 30-04-2020
www.nationaljournals.com
Volume 5; Issue 2; 2020; Page No. 27-29

महात्मा गाँधी जी के जीवन दर्शन का अध्ययन तथा वर्तमान भारतीय समाज में उसकी सार्थकता

सुनीता रानी [1], समी उर्रहमान खान सूरी [2]
[1] शोधकर्ती (शिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेशं, भारत
[2] शोध निदेशक, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

शिक्षा जड़ नहीं अपितु एक चेतन तथा स्वेच्छित द्विमुखी प्रक्रिया है। इस दृष्टि से शिक्षा के लिए दो व्यक्तियों का होना परम आवश्यक है– एक शिक्षक और दूसरा बालक। शिक्षक के कुछ आदर्श, मूल्य तथा विश्वास होते हैं और बालक इन सबसे प्रभावित होता है। दूसरे शब्दों में, शिक्षक एक दार्शनिक है जो अपने दर्शन के अनुसार बालक के जीवन के विभिन्न पक्षों को विकसित करके वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। इस प्रकार शिक्षा एक प्रत्यक्ष साधन है जिसके द्वारा दर्शन के निर्धारित किये गये लक्ष्यों को प्राप्त किया जाता है। एडमस ने ठीक ही लिखा है–"शिक्षा दर्शन का क्रियाशील पक्ष है। यही दार्शनिक चिन्तन का एक सक्रिय पहलू है।"

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव व्यक्तित्व का विकास होता है। यह सर्वविदित है कि सफलता पूर्णतया शिक्षा के द्वारा ही सम्भव होती है। भारत की भूमि विभिन्नताओं वाली भूमि है इस पर अनेक प्रकार की जातियाँ, भाषा, रंग–रूप, वेश–भूषा और संस्कृति विद्यमान है किन्तु अनेक विभिन्नताओं के होते हुये भी भारत में अनेकता में एकता है, इस एकता के पीछे जिस वस्तु का सहयोग है वह है शिक्षा। जो कुछ भी साधन या व्यवहार मानव के ज्ञान का विकास करें, भावनाओं व इच्छाओं का परिष्कार करें, तर्क–चिन्तन का विकास करें, वही औपचारिक व अनौपचारिक रूप से शिक्षा है।

शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य मानव व्यवहार का परिमार्जन करना है तथा इसके साथ ही संस्कृति का हस्तान्तरण करना भी है। क्योंकि शिक्षा के माध्यम से संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा होता है तो उसे उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने– पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाने लगती हैं। जब वह तीन– चार वर्ष का होता है तो उसे पढ़ना–लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा बड़े सुनियोजित ढंग से चलती है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता रहता है और सीखने–सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है और जीवन भर चलता है। और विस्तृत रूप में देखें तो किसी समाज में शिक्षा की यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। अपने वास्तविक अर्थ में किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सीखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। बिना साहित्य के अध्ययन के अनुसंधानकर्ता सही दिशा में एक भी कदम नहीं बढ़ा सकता है। डब्ल्यू0 आर0 बोज के शब्दों में– ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है। जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को ग्रहण नहीं कर लेते, तब तक हमारे कार्य की प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की संभावना रहती है अथवा ये पुनरावृत्त भी हो सकते हैं।'' शोधकर्ती ने विषय को चयनित करने के बाद विषय से सम्बन्धित जानकारी हेतु गाँधी जी से सम्बन्धित पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन किया है।

सिंह, प्रवीण कुमार (2007) ने अपने शोधप्रबंध "भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन" में समाजवादी चिन्तकों के जीवन दर्शन, शिक्षा दर्शन तथा समाज एवं संस्कृति का अध्ययन किया। इसमें उन्होंने पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, नारी शिक्षा, साक्षरता अभियान, विज्ञान, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा, अनुशासन आदि विषयों पर अध्ययन किया तथा सुझाव दिये।

डॉ0 सरोज कुमरा वर्मा (1991) ने आचार्य रजनीश के दार्शनिक विचार : एक समीक्षात्मक अध्ययन विषय को लेकर पी0एच–डी0 की उपाधि प्राप्त की है। इसमें उन्होंने आचार्य रजनीष द्वारा धर्म, आत्मा, परमात्मा, जगत, शिक्षा, समाज, नीति, प्रेम, मोक्ष, योग, ध्यान आदि के सन्दर्भ में उनके विचारों की व्याख्या की। शोधकर्ता के केन्द्र विषय दार्शनिक अवधारणा रहे हैं।

भट्ट, जे0 एम0 (1973) के शोध प्रबन्ध का उद्देश्य विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन का उनके जीवन के सन्दर्भ में अध्ययन करना था। विनोबा के दर्शन के अनुसार जीवन के लिये शिक्षा आज एक प्रक्रिया नहीं बल्कि एक उद्देश्य के साथ प्रक्रिया है। शिक्षा में आत्म परिचय, पाठ्यक्रम में जीवन तथा परिश्रम का महत्व बताया जाना आवश्यक है। आध्यात्मिकता को शिक्षक द्वारा शिक्षा में बल दिया जाना चाहिये। विनोबा भावे ने एक सर्वोदयावदी के रूप में, एक व्यक्ति के रूप में सामाजिक प्राणी के विकास की प्रेरणा दी और व्यक्ति को समाज के विकास का आधार मानते हुए व्यक्ति और समूह के विकास में एक रिश्ता कायम करने का प्रयास किया। विनोबा का दर्शन छात्रों को निर्भयता, अहिंसा, शान्ति तथा लोकतंत्र के आदर्शों का पाठ सिखाना चाहता है। विनोबा के दर्शन की तुलना गाँधी के दर्शन से करने पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि दोनों दार्शनिकों के विचार जीवन के अन्तिम लच्य का सम्बन्ध लगभग समान ही है। लेकिन गाँधी जी के दर्शन स्वतंत्रता के राजनैतिक उद्देश्य से बंधा हुआ था जबकि विनोबा पुनः सामाजिक निर्माण के विषय में अधिक चिन्तित थे।

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्व

महात्मा गाँधी जी

प्राचीन काल से ही भारत भूमि रत्नगर्भा के नाम से प्रसिद्ध हुआ है जिनके आलौकिक प्रकाश की किरणों से चारों ओर प्रकाश हो रहा है। भारत अपनी संस्कृति, सभ्यता, साहित्य, कला, विज्ञान तथा धर्म के साथ–साथ अपने यहां अवतरित महापुरूषों के लिए भी विश्व में ख्याति प्राप्त कर चुका है। उन महान विभूतियों में गांधी जी को एक महान दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, शिक्षाशास्त्री तथा नव चेतना का मूर्तिमान युग पुरूष माना जाता है। गांधी जी भारतीय इतिहास की उन गिनी–चुनी महान विभूतियों में है जो राष्ट्र को एक नवीन दिशा की ओर ले जाते हैं। महात्मा गांधी के विचारों में भारतीयता की झलक साफ दिखायी देती है। गांधी जी का नाम भारत की सामाजिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में अपने विचारों को प्रस्तुत करने वाले विचारकों में प्रथम पंक्ति के विचारकों में लिया जाता है। इनके लेखों में विभिन्न भारतीय समस्याओं व आदर्शों का विश्लेषण एवं विवेचन विस्तृत रूप से देखने को मिलता है। वैसे तो गांधी जी ने अपने विचारों को किसी क्रमबद्ध सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है लेकिन अनुभव के आधार पर समस्याओं पर विस्तृत विचार प्रकट किये हैं।

गांधी जी का अस्तित्व उस शिक्षक के समान है जो अपने विचारों के ज्ञान के प्रकाश को पृथ्वी के विहंगम स्थानों तक पहुंचाना चाहता है। गांधी जी ऐसे शिक्षक थे जिन्होंने ऐसे आधारभूत सिद्धान्त प्रस्तुत किये जिनसे मानव जाति के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सके। गांधी जी एक बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्व समुद्र के समान विशाल व गहरा था। उन्होंने भारत की अस्मिता में चार चांद लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

महात्मा गांधी के सम्पूर्ण जीवन को जानने के लिए उनसे जुड़ी प्रत्येक घटना, तथ्य, जन्मभूमि आदि का ज्ञान आवश्यक है। इनसे जुड़ा प्रत्येक पहलू यदि जानना है तो विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है कि कैसे एक साधारण बालक मोहनदास इतिहास के पन्नों पर महात्मा गांधी के नाम से विख्यात हुआ।

अध्ययन का महत्व

महात्मा गांधी जी का जीवन दर्शन वर्तमान समय में शिक्षा जगत में एक नई प्रकार की किरणें बिखेर सकता हैं क्योंकि वर्तमान शिक्षा जगत को जिन लक्ष्यों और आदर्शों की अधिक आवश्यकता है वो महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन में निहित हैं। इसी कारण से शोधकर्ती ने महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन का अध्ययन तथा वर्तमान भारतीय समाज में उसकी सार्थकता नामक विषय शोध हेतु चुना है। अतः शोधकर्ती ने अपने शोध के माध्यम से महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन को जानने की कोशिश की ताकि उनके जीवन दर्शन का अध्ययन करके वर्तमान भारतीय समाज में उसके महत्व को अपनाया जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य

महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन का अध्ययन करना।

समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध में महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन सम्बन्धी विचारों की वर्तमान भारतीय समाज में सार्थकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। यह शोध अध्ययन महात्मा गांधी जी द्वारा प्रस्तुत जीवन दर्शन के सम्बन्ध में दिये गये विचारों तक ही सीमित है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत अध्ययन मूल रूप से महात्मा गांधी जी के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके जीवन दर्शन को सुव्यवस्थित करने हेतु नियोजित किया गया। प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि को अपनाया गया। इसके अन्तर्गत महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन सम्बन्धी विचारधारा का अध्ययन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में महात्मा गांधी जी द्वारा लिखित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया।

तथ्यों का संकलन

तथ्यों के संकलन के लिए महात्मा गांधी जी द्वारा लिखित साहित्य तथा अन्य लेखकों के द्वारा महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन पर लिखे साहित्य का अध्ययन किया गया।

महात्मा गाँधी जी का जीवन दर्शन तथा वर्तमान भारतीय समाज में उसकी सार्थकता

गांधी जी के जीवन दर्शन का आधार भारतीय आदर्शवाद है। उन्हें ईश्वर में अटल विश्वास था। उनके अनुसार हम सब अलग–अलग शरीर धारण करते हैं, परन्तु हम सब में आत्मा एक ही है। यह आत्मा उस परमात्मा का अंश है, जिसे कोई रहीम कहता है और कोई अल्लाह कहता है और कोई ईसा। वे कहते थें कि जिस प्रकार सूर्य की किरणें अनगिनत हैं, परन्तु उन सब का स्रोत एक ही है, इसी प्रकार इस संसार में विभिन्नता के होते हुए भी इसका रचियता एक ही है। कहने का अभिप्राय यह है कि गांधी जी ने विभिन्नता में एकता का दर्शन किया। उनके जीवन दर्शन के पाँच प्रमुख तत्व–सत्य, अहिंसा, निर्भयता, सत्याग्रह तथा ईश्वर है।

(1) सत्य– गांधी जी के जीवन का लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना था। उनका विश्वास था कि संसार नाशवान है। केवल ईश्वर ही अमर है। अतः मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना है। वे कहते थे कि ईश्वर को प्राप्त करने का सबसे अच्छा साधन केवल एक ही है और वह है– सत्य। उनका विश्वास था कि सत्य सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त है। इसमें अनेक सिद्धान्त विशेष रूप से शिवम् तथा सुन्दरम् निहित हैं। गांधी जी के लिए ईश्वर और सत्य में कोई अन्तर न था। वे कहते थे कि यदि कोई व्यक्ति मन, वचन तथा कर्म अथवा कार्य में सत्य का प्रयोग करता है तो उसे ईश्वर अवश्य प्राप्त हो जायेगा। इस प्रकार गांधी जी के अनुसार सत्य का अर्थ केवल वचन तक ही सीमित नहीं है अपितु इसका क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। इसका प्रयोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होना चाहिये। इसीलिए गांधी जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन को सत्य की खोज में व्यतीत किया।

(2) अहिंसा– अहिंसा गांधी जी की दार्शनिक विचारधारा का दूसरा महत्वपूर्ण तत्त्व है। उनका विश्वास था कि सत्य का पालन केवल अहिंसा के द्वारा ही सम्भव है। अतः गांधी जी ने सत्य और अहिंसा को एक–दूसरे से सम्बन्धित मानते हुए इस बात पर बल दिया कि यदि जीवन का लक्ष्य उस सत्य रूपी ईश्वर को प्राप्त करना है तो उसकी प्राप्ति का साधन केवल एक ही है और वह है– अहिंसा। अहिंसा का अर्थ बताते हुए गांधी जी ने स्वयं लिखा– "अहिंसा प्रत्येक प्राणी के विरुद्ध द्वेष का अभाव है यह प्रगतिशील दशा है इसका अर्थ चेतन रूप से कष्ट भोगना है। अहिंसा अपने सक्रिय रूप में जीवन के प्रति सद्भावना है। यह शुद्ध प्रेम है।"

(3) निर्भयता– गांधी जी की अहिंसा नकारात्मक न होकर सकारात्मक थी जिसके अन्तगत निर्भयता तथा सत्यग्रह दो तत्व सम्मिलित थे। अतः निर्भयता गांधी जी के जीवन दर्शन का तीसरा महत्त्वपूर्ण तत्व है। गांधी जी को विश्वास था कि बिना निर्भयता के सत्य तथा अहिंसा का पालन करना असम्भव है। इस दृष्टि से डरपोक तथा कायर व्यक्ति सत्य तथा अहिंसा के सिद्धान्तों का पालन नहीं कर सकता। निर्भयता के अर्थ को स्पष्ट करते हुए गांधी जी ने लिखा है– "निर्भयता का अर्थ– समस्त बाह्य भयों से मुक्ति, जैसे बीमारी का भय, शारीरिक चोट तथा मृत्यु का भय, सम्पत्तिविहीन होने का भय, अपने प्रियजन की मृत्यु का भय, प्रतिष्ठा खोने का भय, अनुचित कार्य करने का भय इत्यादि।"

(4) सत्याग्रह– गांधी जी के अनुसार सत्याग्रह शब्द का अर्थ है–

सत्य का दृढ़ अवलम्बन यह सिद्धान्त सत्य तथा प्यार पर आधारित है। इसके अन्तर्गत विरोधी को कष्ट नहीं दिया जाता अपितु उससे सत्य का समर्थन स्वयं को कष्ट देकर कराया जाता है। गांधी जी के शब्दों में–"इस सिद्धान्त का अर्थ है–विरोधी को कष्ट देकर नहीं, अपितु स्वयं अपने आपको कष्ट देकर सत्य का समर्थन कराना।"

(5) ईष्वर– गांधी जी का ईश्वर में पूर्ण विश्वास था। इनको ईश्वर के अस्तित्व के विषय में किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी। इनके शब्दों में, "वह एक अवर्णनीय तथा गूढ़ शक्ति है, जो सर्वत्र व्याप्त है।" गांधी जी का कहना था कि हम सब अलग–अलग शरीर धारण करते हैं, लेकिन आत्मा हम सब में एक ही है। यह आत्मा उस परमात्मा का अंश है, जिसे राम, रहीम, ईसा या अल्लाह कहा जाता है। जिस प्रकार सूर्य की किरणें, अनगिनत हैं, लेकिन सब का स्रोत एक ही है, उसी प्रकार इस जगत में विभिन्नताओं के होते हुए भी इसका निर्माता एक ही है। इस प्रकार गांधी जी ने जीवन की विभिन्नता में एकता की बात कही। के0एन0 बोस ने लिखा है– "ये ईश्वर की एकता में विश्वास करते हैं और उसी प्रकार समस्त मनुष्य जाति के एक होने में। इससे क्या कि हमारे शरीर भिन्न–भिन्न होते हैं, हमारी आत्मा तो एक है– सूर्य की किरणें अनेक हैं, किन्तु उनका स्रोत तो एक ही है।"

इस तरह से महात्मा गॉधी के जीवन दर्शन सम्बन्धी विचार आज भी सार्थक हैं। उनके जीवन दर्शन सम्बन्धी विचारों को परिधि में नहीं बॉधा जा सकता। इसकी सार्थकता आज भी बनी हुई है और यह हमारे अन्दर विद्यमान गुणों की ओर रेखांकित करता है।

निष्कर्ष

1. गाँधी जी के जीवन दर्शन का आधार भारतीय आदर्शवाद है। उनके जीवन दर्शन के पाँच प्रमुख तत्व–सत्य, अहिंसा, निर्भयता, सत्याग्रह तथा ईश्वर है।
2. मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना है।
3. अहिंसा अपने सक्रिय रूप में जीवन के प्रति सद्भावना है। यह शुद्ध प्रेम है।
4. सत्य और अहिंसा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।
5. सत्याग्रह सिद्धान्त सत्य तथा प्रेम पर आधारित है।
6. सत्य और अहिंसा के लिए निर्भयता आवश्यक है।

शैक्षिक निहितार्थ

महात्मा गाँधी जी का जीवन दर्शन आधुनिक शिक्षा के लिए आवश्यक क्रियात्मक रूप रेखा प्रस्तुत करता है, जो राष्ट्रीय सीमाओं में ही नहीं अपितु वैश्विक कल्याणकारी सिद्ध हो सकता है।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन सम्बन्धी विचारों का अध्ययन के समान अन्य शिक्षाशास्त्रियों के जीवन दर्शन सम्बन्धी विचारों का अध्ययन किया जा सकता हैं।

महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन सम्बन्धी विचारों का अन्य शिक्षाशास्त्रियों के जीवन दर्शन सम्बन्धी विचारों से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं

सन्दर्भ सूची

1. ए0एस0 अल्तेकर– प्राचीन भारत में शिक्षा, पटना वि0वि0, किशोर ब्रदर्स, वाराणसी.
2. डॉ० दुबे, रमाकान्त– विश्व के कुछ महान शिक्षा शास्त्री (मीनाक्षी प्रकाशन दिल्ली)
3. मिश्र, आत्मानन्द (1972)– भारतीय शिक्षा के प्रर्वतक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
4. एम॰बी॰ बुच (1988–92)– फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वाल्यूम–2.
5. डॉ0 सरोज कुमार वर्मा (1991)– आचार्य रजनीश के दार्शनिक विचार पी0 एच–डी0 एजूकेशन।
6. जे0एम0 भट्ट (1973)– ''विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन का अध्ययन,' 'पी0–एचडी0, शिक्षा एस0 पी0 वि0 वि0, उद्धृत सेकेण्ड सर्वे आफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन, पृष्ठ 31
7. सिंह, प्रवीण कुमार (2007)– भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन"।
8. गॉधी, महात्मा (2013)– हिंद–स्वराज्य, राजपाल–सन्ज।
9. गॉधी, एम0के (2008)– सत्य के साथ मेरे प्रयोग, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।
10. पाण्डेय, संगम लाल (2014)– नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण, सेंट्रल पब्लिशिंग हाउस।
11. गॉधी, महात्मा (2009)– जीवन और दर्शन, लोकभारती पेपरबैक्स।